VANUARY

* वय - संधि :- बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के बीच की अवस्था को वय - संधि कहते हैं

* बालक के व्यक्तित्व (व्यवहार) के अध्ययन की जाँच (गुणात्मक व परिणात्मक) दो पहलुओं पर की जाती है। जाँच के निम्न पहलु होते हैं।

1) शारीरिक विकास।
2) मानसिक विकास।
3) संवेगात्मक विकास।
4) सामाजिक विकास।
5) आर्थिक विकास।
6) सांस्कृतिक विकास।
7) चारित्रिक विकास।
8) सौंदर्यात्मक विकास।
9) अवधान व रुचि का विकास।
10) व्यक्तित्व का विकास।
11) गत्यात्मक विकास (निरंतर) Important)
12) भाषा का विकास।
13) नैतिक विकास।
14) चिंतन व रुचि का विकास।
15) खेल का विकास। आदि।

* बालविकास की उपयोगिता :
→ बाल विकास की उपयोगिता को निम्न चरणों द्वारा व्यक्त किया जाता है।
1) बालक के स्वभाव को समझने के लिए।
2) बालक के निर्देशन के क्षेत्र में।
3) बालक के शिक्षा के क्षेत्र में।
4) बालक के व्यक्तित्व के विकास में।

5) बालक के व्यवसाय के क्षेत्र में।
6) मानसिक स्वास्थ्य में बालक का विकास।
7) बाल - अपराध रोकने के लिए।
8) खेल - कूद एवं मनोरंजन के क्षेत्र में।
9) न्याय के क्षेत्र में।
10) पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने के लिए बाल - विकास की उपयोगिता है।
11) विश्व - शांति के लिए।

5/38

बाल - विकास को प्रभावित करने वाला कारक!-

1.) आनुवांशिक कारक ! — मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर यह प्रस्थापित किया है कि बाल- विकास पर भी आनुवांशिकता का थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ता है। भारत में कई ऐसे महान लोगों के उदाहरण मिल जाते हैं जिनके पूर्वज उच्च सामाजिक मूल्य धारण करते थे और उनमें भी सामाजिक मूल्यों की प्रधानता थी।

2) वातावरण ! —
रॉस ! — "कोई बाह्य शक्ति जो हमें प्रभावित करती है वातावरण कहलाता है।"
अनुकूल वातावरण शारीरिक विकास पर अनुकूल प्रभाव डालता है जबकि प्रतिकूल वातावरण का प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

3.) शिक्षण एवं प्रशिक्षण ! — बाल - विकास को प्रभावित करने में शिक्षण एवं प्रशिक्षण का बहुत महत्व होता है। क्योंकि इस उम्र बच्चों को सही दिशा - निर्देशन मिलना जरूरी है।

Scanned with CamScanner

4) परिपक्वता :-
5.) आर्थिक स्तर :-
6) संस्कृति :- इस उम्र में बच्चों को संस्कृति से कोई मतलब नहीं रहता है।
7.) पोषण :- बालक का स्वस्थ एवं स्वभाविक विकास विशेष रूप से पौष्टिक तथा संतुलित आहार पर निर्भर है।

सोरेन्सन - " पौष्टिक आहार भोजन थकान का प्रबल शत्रु है और शारीरिक विकास का परम मित्र।"

8.) वैक्तिक विभिन्नता
9) सामाजिक संगठन
10) शुद्ध वायु एवं प्रकाश।
11) पारिवारिक वातावरण :- परिवार ममता का स्थल होता है। ममता, मैत्री, वात्सल्य, प्रफुल्लता, स्नेह, सहयोग, संरक्षण, सहानुभूति परिवार में ही सुलभ होती है।

Scanned with CamScanner

बाल्यावस्था, वृद्धि एवं विकास

* वृद्धि (अभिवृद्धि) का अर्थ !– कोशिकाओं में होनेवाला परिवर्तन वृद्धि कहलाता है। जैसे – लंबाई चौड़ाई भार।

1. वृद्धि का संबंध मात्रात्मक होता है या संख्यात्मक होता है।
2) वृद्धि का समय निश्चित (0-25 वर्ष) होता है।
3) वृद्धि एकपक्षीय है। (शरीर से)

* विकास का अर्थ !– विकास गर्भ से लेकर जीवनपर्यन्त या मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया को विकास कहते है।

1. विकास का संबंध संख्यात्मक + गुणात्मक दोनों से होता है।

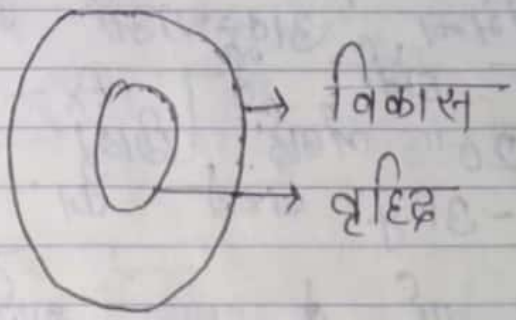

2) विकास सभी पक्षों में होता है। (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक)

Scanned with CamScanner

* बालविकास के नियम व सिद्धांत

1) विकास परिपक्वता एवं अधिगम के स्वरूप होता है।

2) विकास के प्रति मानव की भविष्य वाणी की जाती है। विकास दो प्रकार से होता है।

विकास
- सिर पदाभि मुख दिशा
- सन्निकट दूरस्थ दिशा

1) सिर पदाभि मुख दिशा का अर्थ !- सिर से पैर की ओर होनेवाला विकास।

2) सन्निकट दूरस्थ दिशा :- नाभि से भुजाओं की तरफ होनेवाला विकास।

3) विकास एक निश्चित (निरंतर) क्रम में होता है।

4) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।

5) विभिन्न अवस्थाओं में विकास की गति भिन्न होती है। Ex- गर्भकाल में (9 माह) 18 - 20" लंबाई शिशु की होती है तथा 2.50 - 3 kg बच्चे का वजन होता है।

6) 1 वर्ष के बाद शारीरिक विकास की गति धीमी हो जाती है।

* मानव की अवस्थाएं !-

1) शैशवावस्था !- शैशवावस्था में शारीरिक विकास

V.V.I. * शारीरिक विकास !-

1) भार :- जन्म के समय शैशवावस्था में

8/38
Scanned with CamScanner

बालक का भार बालिकाओं से ज्यादा होता है। जन्म के साथ बालक का भार (7.15 Pb (पौंड); बालिकाओं का भार (7.13Pb) होता है। पहले छह माह में शिशु का भार दुगुना हो जाता है। 1 वर्ष के अंत में तीगुना हो जाता है। दूसरे वर्ष में शिशु का भार 1/2 पौंड प्रति माह के हिसाब से ब[illegible] 5वें वर्ष के अंत में शिशु का [illegible] पौंड होगा।

उसके बाद बालकों की लंबाई बालिकाओं से आगे निकलने लगती है। पहले वर्ष में शिशु की लंबाई लगभग 10" और दूसरे वर्ष में चार या पाँच इंच बढ़ती है। तीसरे वर्ष में, चौथे, पाँचवें वर्ष में उसकी लंबाई कम बढ़ती है।

जन्म के समय संपूर्ण शैशवावस्था में बालक की लंबाई बालिका से अधिक होता है। जन्म के समय बालक की लंबाई 20.5", बालिका की लंबाई 20.3" अगले तीन या चार वर्ष में लड़की की लंबाई लड़का से अधिक होती है।

* सिर और मस्तिष्क :- नवजात शिशु के सिर की लंबाई उसके शरीर की कुल लंबाई की 1/4 होती है। पहले दो वर्षों में सिर बहुत तीव्र गति से बढ़ता है परंतु उसके बाद शिशु के मस्तिष्क का भार 350 g होता है। शरीर के कुल भाग के अनुपात में अधिक होता है। यह भार

Scanned with CamScanner

350 g होता है और शरीर के कुल भार के अनुपात से अधिक होता है। यह भार 2 वर्ष में दोगुना और 5 वर्ष में शरीर के कुल भाग का लगभग 80% होता है।

* दाँत :→ 6 माह में शिशु के अस्थायी दाँत या दूध के दाँत निकलने आरम्भ हो जाते हैं। सबसे पहले नीचे के अगले दाँत निकलते हैं। 1 वर्ष की आयु में इनकी संख्या 8 हो जाती है। लगभग 4 वर्ष की आयु तक शिशु के सभी दाँत निकल जाते हैं।

* हड्डियाँ :→ नवजात शिशु की हड्डियाँ, नवजात शिशु की हड्डियाँ छोटी और संख्या में 270 होती हैं। संपूर्ण शैशवावस्था में हड्डियाँ छोटी, लचीली और भली प्रकार से जुड़ी नहीं होती हैं। ये कैल्सियम फॉस्फेट ($CaSO_4$) को अन्य खनिज पदार्थों की सहायता से दिन-प्रतिदिन हड्डियाँ कड़ी होती जाती हैं। इस प्रक्रिया को अस्थिकरण कहते हैं। बालक की तुलना में बालिकाओं के में अस्थिकरण की गति तेज पायी जाती है।

* अन्य अंग :→ मांसपेशियों का भार उसके शरीर के कुल भाग का 23% होता है। ये भाग धीरे-धीरे बढ़ता है। जन्म के समय नवजात शिशु की हर्ट की धड़कन कभी तेज कभी निम्न होती है।

Scanned with CamScanner